© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 3 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X
Themed Section: Education

सूर्यमाहात्म्य

डॉ. वीरेन्द्र कुमार मौर्य
असि0 प्रोफेसर संस्कृत,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर,
अम्बेडकरनगर।

वैदिक देवताओं के नामों से उनकी वास्तविक स्थिति और प्रतिष्ठा का ज्ञान होता है। कुछ प्राकृतिक तत्त्वों के अभिधानों का विशेषणों ने धीरे–धीरे देवताओं का रूप ग्रहण कर लिया। जैसे–लोकों को प्रकाशित करने वाले देव सूर्य। सूर्य के रूप में वैदिक ऋषियों ने जगत् को प्रकाशित करने वाले एवं प्रातःकाल प्रत्येक व्यक्ति में नवशक्ति का संचार करके उसे कार्यों में संलग्न कर देने वाले आकाशस्थ ज्योतिष्पिण्ड का ही वर्णन किया है। सूर्य का भासमान मण्डल ही ऋषियों के सम्मुख प्रमुख रूप से वर्णनीय रहा है, उसका अधिदैविक स्वरूप नहीं है।

सूर्य के लिए उनके मार्ग का निर्माण वरुण देव[1] द्वारा अथवा आदित्यगण, मित्र,वरुण, अर्यमन् द्वारा किया गया है।[2] पूषन् देव इनके दूत हैं।[3] उषा देवी सूर्य और साथ ही साथ अग्नि एवं यज्ञ को उत्पन्न करती हैं।[4] सूर्य देव उषा की गोद में प्रकाशित होत हैं।[5] किन्तु एक स्थल पर उषा को सूर्य की पत्नी कहा गया है।[6]

ऋग्वेद में अनके स्थलों पर सूर्य की कल्पना शून्य में भ्रमण करने वाले पक्षी के रूप में है। इन्हें उड़ने वाले लाल पक्षी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।[7] इनकी तुलना उत्क्रोश पक्षी के रूप में की गया है[8] और एक स्थल पर इन्हें साक्षात् उत्क्रोश पक्षी कहा गया है।[9] सूर्य के अश्व इनकी सात किरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि ऐसा कहा गया है कि इनकी सात रश्मियाँ ही इनको वहन करती हैं।

सृष्टि के प्रसंग में सूर्य को सर्वप्रमुख उत्पादक स्वीकार किया जाता है। वह सकल स्थावर एवं जंगम की आत्मा है।[10] सूर्य समस्त विश्व में व्याप्त है।[11] वे अन्तरिक्ष के शून्य स्थानों को माप लेते हैं और सूर्य पर आधृत होकर ही सूर्य मण्डल प्रकाशित होता है[12] क्योंकि उनके उदय के पश्चात् ही मनुष्य एवं अन्य प्राणियों के नेत्र सांसारिक विषयों को देख पाते हैं।[13]

प्रकृति की प्रत्येक दिशा में सूर्य की किरणाों के प्रवेश के कारण सूर्य को बहुत दूर तक देखने वाला कहा गया है। उनके लिए उरुचक्षा[14] दूरेदृश[15] एवं विश्वचक्षा[16] विशेषण प्रयुक्त हुए हैं। सूर्यदेव मनुष्य के सभी

कृत्यों को देखते हैं। तथा प्राणियों के शुभ एवं अशुभ कर्मों को जानते हैं।[17] वे जगत् को स्थिर रखने वाले तथा जगत् के रक्षक हैं।[18] उनके बिना इस संसार की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। ऋग्वेद में सूर्य को दुःखों, रोगों एवं दुःस्वप्नों को शमन करने वाला बताया गया है।[19] शुक्ल यजुर्वेद(2/26) में इन्हें **'स्वयम्भूः'** कहा गया है। वे ब्रह्म हैं। वे संसार की वर्तमान तथा भविष्य काल में होने वाली समस्त वस्तुओं के मूलकारण हैं।[20] शुक्ल यजुर्वेद(7/42) में ऋग्वेद (1/115/1) का **'सूर्य आत्मा जगत्स्तस्थुश्च'** मंत्र भी उद्धृत किया गया है। इससे प्रतीत होता है कि उस समय सूर्य को जगत् का आदिकारण अथवा प्रजापति मानने की धारण धीरे–धीरे उद्भूत हो चली थी। जैसा कि बृहद्देवता में कहा गया है।

'भवद्भूतस्य भव्यस्य जंगमस्थावरस्य च,
अस्यैके सूर्यमेवैकं प्रभवप्रलयं विदुः।
असतश्च सतश्चैव योनिरेषा प्रजापतिः,
यदक्षरं च वाच्यं च अथैतद् ब्रह्म शाश्वतम्।। बृहद्देवता–1/61–62

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सूर्य की एक रश्मि का नाम 'वृष्टिवनि' (वृष्टि प्रदान करने वाली) है जिससे वह जलवृष्टि के द्वारा समस्त प्रजा का भरण–पोषण करते हैं।[21] उन्हें पापों का नाशक भी कहा गया है।[22] सूर्य दिन एवं रात्रि के नियामक हैं। अतः ऋग्वेद में उनसे आयु बढ़ाने की प्रार्थना की गयी है।[23] अथर्ववेद में सूर्य को नेत्रों का अधिपति बताया गया है और उनसे नेत्रों की रक्षा के लिए प्रार्थना की गयी है।[24] अथर्ववेद में इस बात का भी उल्लेख है कि यह सृजित प्रणियों के नेत्र है और आकाशीय सीमा के बाहर भी पृथिवी और जल का अवलोकन करने वाला है।[25] एक अन्य स्थल पर भी नेत्र और सूर्य के सम्बन्ध का संकेत प्राप्त होता है, जहाँ मृतकों के नेत्र को सूर्य को पास चले जाने की धारणा मिलती है।[26] सूर्यदेव दृष्ट एवं अदृष्ट दोनों प्रकार की कृमियों को नष्ट करते है[27] मनुष्य को दीर्घायु[28] तथा मेधावी[29] बनाते हैं। अथर्ववेद में ही आदित्य शब्द अनकेशः सूर्य के लिए प्रयुक्त हुआ है।

अथर्ववेद के तेरहवें काण्ड में सूर्य का वर्णन रोहित के रूप में हुआ है।रोहित अर्थात् सूर्य यज्ञों के मुख हैं।[30] क्योंकि सूर्योदय होने पर यज्ञ प्रारम्भ होता है। सूर्य कर्ता एवं धर्ता हैं। वे तेजस्विता के केन्द्र हैं। सबसे धारक एवं आकर्षक हैं। सबको अधीन रखने वाले वे ही देव हैं जो सूर्यमाला के ग्रहों और उपग्रहों को धारण करते हैं।[31] जो कुछ इस पृथिवी पर विद्यमान है, वह सूर्य के अंश का परिणाम है। इससे स्पष्ट होता है कि सभी चराचर पार्थिव एवं अपार्थिव वस्तु जो भी इस भूमि पर विद्यमान है, वह सूर्य से बनी है। वह सूर्य पुण्यात्मा मनुष्य और पापी राक्षस के लिए समान रूप से गरजते, चमकते, आले बरसाते और वृष्टि करते हैं। वह किसी का पक्षपात नहीं करते। उनका प्रकाश सबके लिए समान रीति से आता है। वह पुण्यात्मा के लिए प्रकाशते हैं और पापी के लिए नहीं, ऐसी बात नहीं, वह सबको ही अपने प्रकाश से मार्ग दर्शाते हैं।[32] सब लोगों तथा समस्त जगत को अन्धकार से हटाकर प्रकाश में लाने के लिए रात्रि और दिन के युग में सूर्य देव का अवतार होता है। प्रत्येक युग में इस इस तरह का अवतार हो रहा है और यहाँ आकर हमें प्रकाश का मार्ग बताकर हमारा उद्धार करते हैं। यदि सूर्य देव प्रकट न हों तो समस्त जगत् में अन्धकार छा जायेगा और जीव की स्थिति ही नहीं रहेगी । हम सबका जीवन उन्हीं के प्रकाश से सम्बन्धित है। हमारे जीवन का मूल आधार सूर्यदेव ही हैं। इन्हीं की जीवन शक्ति से सबका जीवन संचालित हो रहा है। इस तरह इस जगत् का कण–कण उनसे सम्बद्ध है।

सूर्य के सम्बन्ध में केवल एक ही पुराकथा मिलती है कि इन्द्र ने इनको पराजित किया था। इससे झंझावात द्वारा सूर्य के आच्छादित हो जाने का लक्षणात्मक आशय स्पष्ट हो जाता है। अवेस्ता में ह्वरे(सूर्य) को भी वैदिक सूर्य की भाँति ही द्रुतगामी अश्वों वाला तथा 'अहुर मज्द' का नेत्र कहा गया है।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेदसंहिता 1/24/8, 7/87/1
2. ऋग्वेदसंहिता 7/60/4
3. ऋग्वेदसंहिता 6/58/3
4. ऋग्वेदसंहिता 7/80/2, 7/78/3
5. ऋग्वेदसंहिता 7/63/3
6. ऋग्वेदसंहिता 7/75/5
7. ऋग्वेदसंहिता 5/47/3
8. ऋग्वेदसंहिता 7/63/5
9. ऋग्वेदसंहिता 5/45/9
10. सूर्य आत्मा जगत्स्तस्थुषश्च' ऋग्वेदसंहिता 1/115/1
    वाजसनेयिसंहिता 7/42, 13/46, अथर्ववेद 13/2/35, 20/107/14
11. 'एकः सूर्यो विश्वमनुप्रभूतः 'ऋग्वेदसंहिता 8/58/2
12. ऋग्वेदसंहिता 1/121
13. 'सूर्यो भूतस्यैकं चक्षुः अथर्ववेदसंहिता–13/1/45 ऋग्वेदसंहिता 10/158/4
14. ऋग्वेदसंहिता 7/35/8
15. ऋग्वेदसंहिता 10/37/1
16. ऋग्वेदसंहिता 1/50/2
17. 'ऋजु मर्त्येषु वृजिना च पश्यन् अभिचष्टे सूरो अर्थ एवान्' ऋग्वेदसंहिता 6/51/2
18. विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा' ऋग्वेदसंहिता 7/60/2
19. (क) 'अस्मद्.....अपामीवाम् अप दुःस्वप्नं सुव, ऋग्वेदसंहिता 10/37/4
    (ख) ऋग्वेदसंहिता 1/50/11–13
20. शुक्ल यजुर्वेद–13/1
21. शतपथ ब्राह्मण–14/2/1/21
22. 'सूर्य एवैषा पाप्मनो अपहन्ता', शतपथ ब्राह्मण 2/1/4/9
23. ऋग्वेदसंहिता 8/4/7
24. 'सूर्य चक्षुषामधिपतिः स मामवतु', अथर्ववेदसंहिता–5/24/9
25. अथर्ववेदसंहिता–13/1/45
26. ऋग्वेदसंहिता 10/16/3
27. अथर्ववेदसंहिता–6/23/6
28. अथर्ववेदसंहिता–8/1/5,12
29. अथर्ववेदसंहिता–6/108/1
30. 'रोहितो यज्ञानां मुखम्', अथर्ववेदसंहिता–13/2/39
31. 'स धाता स विधाता' अथर्ववेदसंहिता–13/4/4
32. 'स स्तनयति स विद्योतते स उ अश्मानमस्यति।
    पापाय स भद्राय वा पुरुषायासुराय वा।। अथर्ववेदसंहिता–13/7/41